अध्याय पहला

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी का साहित्यिक परिचय

अध्याय पहला

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी का साहित्यिक परिचय

१) नेफा की एक शाम
२) माटी जागी रे
३) वतन की आवाज़
४) चिराग जल उठा
५) शुतुरमुर्ग
६) अनुष्ठान
७) दंगा

अध्याय पहला

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी का साहित्यिक परिचय

हिन्दी नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में मध्यमवर्गीय जीवन के विविध रूपों और पहलुओं को परत-दर-परत उघाड़कर बारीकी से उसकी विडम्बनाओं और विषमताओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण करने वाले रचनाकारों में ज्ञानदेव अग्निहोत्री का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अग्निहोत्री हिन्दी के आधुनिक नाटककार हैं, जिनके नाटकों में रंगमंच की स्पष्ट चेतना दिखाई देती है। रंगमंच को सीढी बनाकर बम्बई की कोलाहलपूर्ण फिल्मी दुनिया में जा जानेवाले हिन्दी के अनेक रंगकर्मियों में से एक प्रमुख नाम है - ज्ञानदेव अग्निहोत्री।

आपका जन्म ५ अगस्त, १९३५ में कानपुर में हुआ। बचपन से ही आपको अभिनय के क्षेत्र में रूचि थी। उन्हीं दिनोंमें बंगला नाटक दुर्गापूजा के अवसर पर मंचित होते थे, इनमें आप छोटे-मोटे अभिनय करते थे। इसी-तरह बचपन में ही रंगमंच की चिनगारी उनके दिल में पैदा हो गयी।

आपने अंग्रेजी साहित्य और समाजशास्त्र के प्रवक्ता के रूप में काम किया। उन दिनों आपके साथी आपको कुरेदते रहे, जगाते रहे, कुछ नया ताजा लिखने के इंजेक्शन देते रहे।[१]

सन १९५२ में आपने विश्वनाथ त्रिपाठी के लिखित और निर्देशित हिन्दी नाटक `सीधा रास्ता` में अभिनय किया। उस वक्त दर्शकों से जो तालियाँ मिली, उन्हीं तालियोंने आपके जीवन में उजाला कर दिया। उसके बाद आपने `श्री कृष्ण महिमा,` `टीपू सुलतान,`` मीर कासिम,` आदि नाटकों में मुख्य भूमिकाएँ की।

---

१) ज्ञानदेव अग्निहोत्री : दंगा - अपनी बात, संस्करण १९८४.

रंगमंचीयता के प्रति प्यार और लगन के कारण एक उच्च कोटि के अभिनेता और निर्देशक के रूप में आपकी ख्याति हो गयी। इसी समय आप उत्तर प्रदेश की प्रसिध्द संस्था `नाटय-भारती` में निर्देशक के कार्य में मग्न थे।

आपने अधिकतर युध्द नाटक ही लिखे है। अपने देश के प्रति उनमें अपार श्रध्दा और आस्था हैं। देश प्रेम उनके मस्तिष्क में कूट-कूट भरा हैं। समाज का साधारण सदस्य होने के करण वह युध्द जनित सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भी अपने आप को बचा नहीं सकता।[१] आपने नाटकों द्वारा अपना देश प्रेम व्यक्त किया हैं।

`रंगमंच` ही आपका अपना घर बन गया। इस घर में ऐसा सुख, रस और ममता मिल गयी, जो अपनी माँ के घर में मिलती थी।[२]

१९७२ के बाद दस साल तक वे फिल्मों की झूठी चमक दमक और ऊँची महत्वाकांक्षाओंकी गलियों में भटकते रहे। इस काल में आपको चैन की नींद कभी नहीं आयी। जो आज रंगमंचीयता से एकरूप होने के कारण जो आनंद मिला, मानों खोया हुआ माँ का प्यार फिरसे मिल गया।

उनका वक्तव्य परिस्थिति के अनुकूल संदिप्त, सजीव, सरस और सार्थक हैं। इनकी भाषा सरल, चुस्त और प्रवाहपूर्ण हैं। प्रतीक के रूप में साहित्य की निर्मिति करना उनकी आदत सी बन गई हैं।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी हमेशा चिंतन-शील रहते हैं....। चिंतन स्वभावत: प्रगतिशील होता है।[३] वे एक नई चेतना स्फूर्ति

---

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री : वतन की आवाज
मूमिका सं. १९७४
२. ज्ञानदेव अग्निहोत्री : दंगा
अपनी बातसं. १९८४
३. अवधेश चंद्र गुप्त : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक
विचार तत्व प्राक्कथन

और विद्रोह लेकर सामने आए हैं। प्रत्येक नाटककार अपनी नाटयकृति द्वारा जीवन के किसी न किसी मूल्य, अन्तर्दृष्टि, सामाजिक, दार्शनिक, नैतिक और मानवीय उपलब्धि को ही व्यक्त करता है।[१]

अग्निहोत्रीजी के नाटकों में अधिक से अधिक प देशप्रेम व्यक्त हुआ है। नक्रांति का प्रतीक लेकर धीरे-धीरे हिन्दी नाटय-साहित्य में अवतरित हो रही हैं।..... अग्निहोत्री जी के प्राय: सभी नाटकों का सफलतापूर्वक मंचन हुआ है।[२]

१) <u>नेफा की एक शाम</u> : (१९६३)

` नेफा की एक शाम ` ज्ञानदेव अग्निहोत्रीजीका पहला सफल नाटक हैं। यह नाटक भारत और चीन में जो संघर्ष हुआ उसपर आधारित हैं।

आधुनिक हिन्दी नाटय लेखन में इस नाटक को एक कामयाबी नाटक कहा जाता हैं। क्योंकि भारत में यही एक नाटक हैं, जिसके सारे भारत में पंद्रह सौ प्रदर्शन हो चुके हैं। इस नाटक को पाँच राज्य पुरस्कार प्राप्त है, और चार भाषाओं में यह अनूदित है।[२]

भारत और चीन का १९६२ में जो संघर्ष हुआ, उस समय भारतीय सीमाओं पर जो आदिवासी बसे थे, उन लोगोंने अपना सामर्थ्य, शौर्य, राष्ट्रीयता के लिए अपने जान की बाजी लगाकर अपने राष्ट्र की रक्षा की। इसका मर्मस्पर्शी वर्णन ` नेफा की एक शाम ` में व्यक्त किया हैं।

---

१) डा. सुरेशचन्द शुक्ल चन्द्र नीलम मसन्द : हिन्दी नाटक और नाटककार पृ. १४७, सं. १९७०.

२) ज्ञानदेव अग्निहोत्री : शुतुरमुर्ग मुखपृष्ठ क्र. ३

इस नाटक में नौ पात्र हैं । मातई, शीकाकाई, नीमों, केवल, गोगो, फौजी, वांगचू, फुंगशी, यह दो अंकोंमें विभाजित एक सशक्त नाटक हैं । इस नाटक को पढने के बाद हर एक भारतीय को शौर्य एवं देशप्रेम की भावना का संचार निर्माण होता है ।

२) माटी जागी रे : (१९६४)

` माटी जागी रे ` अग्निहोत्रीजी का प्रतीकात्मक नाटक हैं । भारत किसानोंका देश हैं । जब तक किसान सुज्ञान नहीं बनते, तब तक इन लोगोंका अज्ञान, रूढी, परंपरा, अंधश्रध्दा नहीं निकाली जा सकती ।

नाटक का नायक ` प्रकाश ` एक पढा लिखा युवक हैं । वह ज्ञान का प्रसार शिक्षा के माध्यमसे करता हैं । बरसोंसे अंधकार में छिपे हुए ग्रामीण जनजीवन को प्रकाश में लाने का प्रयास करता है । इस पवित्र कार्य में उसे अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पडता है ।

` माटी जागी रे ` उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग द्वारा आयोजित नाटक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित हो चुका है ।[१] उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत इस रंगमंचीय सामाजिक नाटक को तीन अंकोंमें विभाजित किया हैं ।

नाटक में नौ पात्र हैं । भोला, दीनदयाल साहु, बनवारी, दुर्गा, प्रकाश, बसंत, गंगा, रधिया और बिंदिया ।

३) वतन की आवाज : (१९६५)

` वतन की आवाज ` अग्निहोत्रीजी का तीसरा नाटक है । प्रस्तुत नाटक भारत-पाकिस्तान के युध्द पर आधारित नाटक हैं ।

---

१) माटी जागी रे : ज्ञानदेव अग्निहोत्री
भूमिका सं. १९६४

पाकिस्तानी सैनिक भारत पर हमला बोलकर भाग जाते हैं। लेकिन ऐसे समय पर भारतीय जवान अपने देश के लिए प्राणार्पण करते हैं।

`वतन की आबरू` नाटक का नायक इलाही बख्श नामक एक मुसलमान हैं। जो अपनी दोनों लडकियों के साथ पाक आक्रमण कारियों से मुकाबला करते-करते आत्मबलिदान देता हैं, लेकिन दुश्मन के सामने हार नही मानता।

इस नाटक को दो अंकों में विभाजित किया गया हैं। इस नाटक में कुल मिलाकर नौ पात्र हैं। पशमीना, मेजर, रेशमा, पगली, इलाहीबख्श, महबूब, जावेद, केप्टन याकूब, गुलाम मुहम्मद, कलिमाँ आदि।

४) <u>चिराग जल उठा</u> : (१९६६)

`चिराग जल उठा` अग्निहोत्रीजी का एक सशक्त ऐतिहासिक नाटक हैं। संवाद कथाविधान और रचनाशिल्प के अनूठेपण ने `चिराग जल उठा` को सामान्य ऐतिहासिक नाटकों से अलग गिर्मचीय नाटकों के क्षेत्र में एक विशिष्ट इकाई के रूप में स्थापित कर दिया हैं।[२]

यह नाटक टीपू सुलतान के जीवन पर आधारित लिखा है। टीपू की वीरता का प्रदर्शन आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने में नाटककार को सफलता मिली हैं।

टीपू एक धैर्यशील और वीर पुत्र हैं। पिता की मृत्यु के पश्चात् टीपू ने किस धीरता और वीरता के साथ अपने म्हैसूर की रक्षा की। तथा अंत में उन्होंने अपने बलिदान के द्वारा लोगों में किस प्रकार राष्ट्रीयता की लौ जलाई, यह कहानी प्रस्तुत नाटक का कथानक हैं।

---

१) ज्ञानदेव अग्निहोत्री : चिराग जल उठा
भूमिका संस्करण १९७४

५) शुतुरमुर्ग : (१९६८)

` शुतुरमुर्ग ` एक व्यंग्य-प्रधान प्रयोगवादी नाटक हैं। इस नाटक में लेखक ने सामायिक राजनीतिक गतिविधियों पर व्यंग्य करने की चेष्टा की हैं। समकालीन राजनीतिपर किया हुआ व्यंग्य है, और साथ ही साथ यह जीवन के कटु सत्योंसे पलायन करने की वृत्तिपर अद्वितीय प्रतीक नाटक है।

राजनीतिक व्यवस्था और साधारण जनता की आकांक्षा के द्वंद्व के बीच सामान्य प्रजा-जनों का शोषण किस प्रकार होता है, यही विषय को लेकर अग्निहोत्री जी ने कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

प्रस्तुत नाटक का नायक ` राजा `` शुतुरमुर्गी ` प्रवृत्ति का पात्र हैं, जो जीवन के कटु सत्यों से पलायन करता हैं। यह नाटक पूर्ण-कालिक नाटक हैं। इसमें कुल नौ पात्र हैं,

राजा (सुत्रधार), रानी, रक्षा मंत्री, महामंत्री, भाषणमंत्री, विरोधी लाल, मामूलीराम, दासी, और मरता हुआ मनुष्य। प्रत्येक पात्र अपने वर्ग प्रतिनिधि हैं। और जीवन की विशिष्ट विसंगतियों को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करता हैं।

शुतुरमुर्ग, कलकत्ता के व्यवसायी बंगला रंगमंचपर प्रदर्शित होनेवाला पहला आधुनिक हिन्दी नाटक है।[१]

` शुतुरमुर्ग ` नाटक का नायक ` राजा ` शुतुरमुर्गी प्रवृत्ति का पात्र हैं। जो जीवन के कटु सत्यों से पलायन करता हैं। राजा की तरह आज के नेताओं ने नेतागीरी का व्यवसाय किया हैं, वे स्वार्थ सिध्धि के लिए जनता को गुमराह करने में संकोच का अनुभव नहीं करते।[२]

---

१) ज्ञानदेव अग्निहोत्री : शुतुरमुर्ग, पृ. ३
सन १९६८

२) वृन्दावनलाल वर्मा : ` धीरे-धीरे `

६) <u>अनुष्ठान</u> : (१९७२)

` अनुष्ठान ` ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी का ` शुतुरमुर्ग ` जैसा प्रतीकात्मक नाटक हैं। इस नाटक में स्त्री-पुरुषों के जीवन की कटु आलोचना की है। इस नाटक में उपहास, आलोचना, हास्य और व्यंग भी हैं।

` अनुष्ठान ` नाटक में आत्मा की वापसी का अनुष्ठान दिखाया हैं। नाटककार की दृष्टिसे आत्मा की वापसी अब भी संभावित हैं, मनुष्य जीवन अब भी संभावित है।[१]

आज के यांत्रिकी युग में मानव अपना अस्तित्व खो बैठा हैं। वह हमेशा दु:खी है। उसके सभी रिश्ते टूटने लगे हैं। उसका जीवन यंत्र की तरह चलने लगा हैं।

नाटक में सूत्रधार द्वारा पात्रोंको आमंत्रित किया हैं। और उन पात्रों को हिंसा का अनुष्ठान में पात्रोंका नाम नहीं, बल्कि नंबर दिए गए हैं।

भारतीय संस्कृति पुरुष-प्रधान है। प्राचीन काल से पुरुष-प्रधान समाज ने नारी जाती को कैद कर रखा हैं। ` अनुष्ठान ` नाटक में पुरुष प्रेमी पति, भाई, पिता, के रूपों में प्रस्तुत हैं। तो स्त्री प्रियतमा, पत्नी, बहन, माता, के रूप में चित्रित है। पुरुष सभी रूपों में स्त्री पर अत्याचार करता है। और बरसों से स्त्री जाती वह अन्याय चुपचाप सहन कर रही हैं।

नाटक में कुलमिलाकर छ: पात्र हैं। उसमें सूत्रधार प्रमुख पात्र हैं। और पुरुष नं. १, नं. २, नं.३, नं. ४, और स्त्री। एक नए ढंग का यह सफल नाटक हैं।

---

१) अनुष्ठान : ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ.४

७) दंगा - (१९८४)

अनुष्ठान नाटक के बाद अग्निहोत्रीजी ने नाटक लिखना बंद ही कर दिया था। इसी दरम्यान उन्होंने कुछ फिल्मों की स रचना की। और फिल्मी दुनिया से फिर से उन्होंने नाट्य-लेखन में प्रवेश किया।

राष्ट्रीय एकात्मकता का प्रचार एवं प्रसार करने के लिए यह नाटक महत्वपूर्ण है। भारत अनेक धर्मोंका, अनेक जातियों का देश है। ऐसे सर्व धर्म समभाव के तत्वपर चलनेवाले देश में कुछ देशद्रोही, देश की अखंडता खंडित करना चाहते हैं।

यह देशद्रोही सांप्रदायिकता फैलाकर जनता को गुमराह करते है। धर्म के नाम पर देश का विभाजन करना यह उन लोगों का मकसद हैं।

समाज में तनाव पैदा होते ही, ये लोग धार्मिक सांप्रदायिकता फैलाते हैं। इसी भेद प्रवृत्ति का वर्णन अग्निहोत्रीजी ने `दंगा` नाटक में किया हैं।[१]

एकांकी : हत्यार जिंदाबाद (१९६७)

ज्ञानदेव अग्निहोत्रीजी ने इसमें एकांकियों का संकलन किया है। कथा, सिनेकथा, भाषण, गीत, सभी विधाओंमें साहित्य निर्मिति में आज कल वह बंबई में व्यस्त हैं।

अग्निहोत्रीजी के महत्वपूर्ण फिल्म लेखन :

आविष्कार - गीत और संभाषण
याराना - कहानी
नटवरलाल - कहानी
बाबू - संभाषण
राम तेरा देश - संभाषण
घर एक मंदिर - कथा - सिनेकथा

---

१) भीष्म साहनी के तमस उपन्यास से तुलनीय

निष्कर्ष :

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी की साहित्यिक कृतियोंका अध्ययन करने के पश्चात् यह पता चलता है, कि, अग्निहोत्री जी एक सशक्त नाटककार एवं अभिनेता हैं। उन्होंने कुल मिलाकर सात नाटक और एक एकांकी संग्रह की निर्मिति की हैं। नाटककार, अभिनेता, निर्देशक, तथा प्रस्तुतकर्ता अग्निहोत्री जी का रंग-व्यक्तित्व कानपुर और उसके आस-पास की नाटय-चेतना को जागृत करने और अनेक नाटय-कृतियों के माध्यम से हिन्दी नाटक और रंगमंच को समृध्द करने की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं।